17 अप्रैल 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 45, अंक : 02
अप्रैल (द्वितीय), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के उपक्रम अर्हं पाठशाला के बैनर तले...

अध्यात्म और आनंद से सराबोर जयपुर के चार दिन

जयपुर : यहाँ 14 अप्रैल से 17 अप्रैल 2022 तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित अर्हं पाठशाला के त्रि-वर्षीय सफल संचालन के उपलक्ष्य में श्री टोडरमल स्मारक भवन में अर्हं फेस्ट विविध रोचक गतिविधियों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

14 अप्रैल को ध्वजारोहण के पश्चात् जयपुर के विख्यात महावीर-जयंती के जुलूस में सम्मिलित होकर जनसमुदाय को पाठशाला के महत्त्व से परिचित कराया गया एवं रात्रि में बालक महावीर के पालना-झूलन का विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित 'भरत के अंतर्द्वंद्व' नामक नाटक का बिरला ऑडिटोरियम में मंचन फेस्ट में आकर्षण का केन्द्र रहा, इसके अतिरिक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अहिंसा विषय पर प्रवचन तथा डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल व श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के सेमिनारों ने फेस्ट में चार चांद लगा दिए। पण्डितप्रवर टोडरमलजी के हस्तलिखित मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ, उनकी कार्यस्थली (श्री दिगम्बर जैन तेरहापंथ बड़ा मन्दिर) को देखने का सौभाग्य, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल से मुलाकात, आमेर के प्राचीन जैन मंदिरों के दर्शन, हेरिटेज वॉक तथा हवामहल, जलमहल आदि जयपुर की विरासत से परिचय आदि अनेक गतिविधियों सहित १७ अप्रैल को अर्हं पाठशाला के कुशल आध्यापकों सहित श्रेष्ठ विद्यार्थियों के सम्मान समारोह सहित अर्हं फेस्ट अकल्पनीय सफलताओं के साथ सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि सम्पूर्ण कार्यक्रम की सफलता में पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल, पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन, विदुषी प्रतीतिजी मोदी नागपुर एवं महाविद्यालय के विद्यार्थियों का विशेष सहयोग रहा।

अर्हं फेस्ट का विस्तृत समाचार आगामी अंक में शीघ्र ही प्रकाशित किया जाएगा।

प्रशिक्षण शिविर का हार्दिक आमंत्रण

दो वर्ष की प्रतीक्षा के पश्चात् आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग में संस्थापित पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित 54वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर 15 मई से 1 जून 2022 तक पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली में सम्पन्न होने जा रहा है।

18 दिवसीय इस महायज्ञ में श्री समयसार महामण्डल विधान, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का सम्मान समारोह, ढाईद्वीप पंचकल्याणक का मंगल आमंत्रण, संकल्प दिवस पर तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का संकल्प, स्नातक परिषद व प्रशिक्षणार्थियों का सम्मेलन आदि अनेकानेक मांगलिक आयोजन किए जाएंगे।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

आमंत्रण पत्रिका पृष्ठ क्रमांक 4 व 5 पर देखें।

टोडरमल महाविद्यालय का सुयश

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में 26 मार्च 2022 को राष्ट्रीय अंतर्विश्वविद्यालयी महाविद्यालयी युवा महोत्सव 2022 के अवसर पर विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें निबंध प्रतियोगिता में सर्वज्ञ जैन गुढ़ाचंद्रजी ने प्रथम स्थान, वाद-विवाद प्रतियोगिता में संदेश जैन दिल्ली ने प्रथम स्थान, समर्थ जैन हरदा ने तृतीय स्थान व उत्सव जैन बक्सवाहा ने विशिष्ठ स्थान प्राप्त किया एवं नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता में ज्ञाता कक्षा (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर सभी को कर्म सिद्धान्त से अवगत कराया एवं राष्ट्रीय स्तर पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर का परचम लहराया। जैन पथप्रदर्शक परिवार सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

35

सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

- डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

सांसारिक प्रयोजनार्थ धर्मधारक व्यवहाराभासी....

आजकल दुनिया में अनेक जीव कपट से, आजीविका के अर्थ, मान-सम्मान के लिए, बढ़ाई के प्रयोजन से धर्म करते हैं, वे सभी सांसारिक प्रयोजनार्थ धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि हैं।

वहाँ जैनी होकर विषय-कषाय सम्बन्धी प्रवृत्ति का पोषण करते हैं, आजीविकादि के प्रयोजनों को साधते हैं, सो ऐसी बुद्धि तो अति तीव्र कषाय होने पर ही होती है। अधिक क्या कहें, जैनधर्म का सेवन तो संसार नाश के लिए किया जाता है; लेकिन यह जीव उसके द्वारा भी संसार का ही प्रयोजन साधना चाहता है - यह बहुत बड़ा अन्याय है, इसलिए ये सभी मिथ्यादृष्टि ही हैं।

यहाँ कोई कहे कि हिंसादि के द्वारा जिन कार्यों को सिद्ध करते थे, वही कार्य धर्म-साधन द्वारा किए जायें तो क्या बुराई है? यहाँ एक पंथ दो काज हुए, धर्म का धर्म और आजीविका की आजीविका।

पण्डितजी उससे कहते हैं कि पापकार्य और धर्मकार्य का एक ही साधन होने से पाप ही होता है। जैसे - कोई धर्म के साधन चैत्यालय बनवाए और उसी में स्त्री सेवनादि पाप कार्यों को भी करे, तो पाप ही होगा। अपना घर बनवाकर हिंसादि व भोगादि के कार्य करने हों तो करें; परन्तु मन्दिरादि का निर्माण इसलिए करें कि दर्शन भी हो जायेंगे और भोग भी भोग लूंगा तो यह योग्य नहीं है। उसीप्रकार हिंसादि से आजीविका के अर्थ व्यापारादि करने हों तो करें; परन्तु पूजा, शास्त्र-स्वाध्याय आदि इसलिए करें कि पूजा भी हो जाए और धन भी मिल जाए तो वह योग्य नहीं है।

यहाँ कोई कहे कि मुनिराज भी तो घर-घर जाकर भोजनादि करते हैं और साधर्मीजन भी परस्पर उपकार करते-कराते हैं; फिर वह कैसे योग्य हुआ? उससे पण्डितजी कहते हैं कि मुनिराज या साधर्मी के हृदय में आजीविका का कोई प्रयोजन नहीं है। कई जीव उन्हें धर्मात्मा जानकर, नवधा भक्ति पूर्वक, स्वयमेव ही भोजन आदि द्वारा उपकार करते हैं, इसमें वे किसी भी प्रकार से दोषी नहीं हैं। यदि वे भोजनादि का प्रयोजन विचारकर मुनि धर्म साधते तो पापी होते।

इसप्रकार जो सांसारिक प्रयोजन सहित धर्म साधते हैं, वे मिथ्यादृष्टि तो है ही, पापी भी हैं।

पण्डित टोडरमलजी ने आज से लगभग 300 वर्ष पहले जो समाज की फ़ोटो खींची थी, उसे देखकर ऐसा लगता है कि जैसे उसका प्रिंटआउट आज हमारे सामने निकल कर आ रहा हो। इसे ऐसा भी कहा जा सकता है कि पण्डितजी के चिंतन में इतनी दूरदर्शिता/सूक्ष्मता/गहराई थी कि 300 साल पहले लिखी गई समाज की कुरीतियाँ आज भी हू-ब-हू दिखाई दे रही हैं। यह पूरा प्रकरण इस बात को भी सिद्ध करता है कि पण्डित टोडरमलजी ने जितनी गहराई से आत्मा और शास्त्र को पढ़ा था, उतनी ही गहराई से समाज को भी पढ़ा था। पण्डितजी द्वारा लिखे गए यर्थाथ सामाजिक चित्रण को निम्न प्रकरण में देखा जा सकता है -

व्यवहाराभासी धर्मधारकों की सामान्य प्रवृत्ति....

कितने ही जीव लोभादि के अभिप्राय से धर्म साधते हैं, उनके तो धर्म बुद्धि ही नहीं है। यह जीव भक्ति करता है तो चित्त कहीं ओर है, क्रिया में नमस्कार वा पाठ आदि चलता रहता है और दृष्टि इधर-उधर घूमती रहती है। पूजा-पाठ के अर्थ की तो कुछ खबर ही नहीं है। कदाचित् कुदेवादि का सेवन भी करने लग जाता है, इसे सुदेव व कुदेव के अंतर की विशेष पहचान नहीं है।

दान देता है तो पात्र-अपात्र के विचार से रहित जहाँ अपनी प्रशंसा हो वहाँ दान देता है। तप करता है तो भूखा रहकर महंतपना दिखाता है, वहाँ अपने परिणामों की विशेष पहचान नहीं करता। व्रतादिक धारण करता है तो वहाँ बाह्यक्रिया पर ही दृष्टि रखता हुआ रागादि का ही पोषण करता है। पूजा-प्रभावनादि कार्य भी लोक में बढ़ाई के अर्थ करता है वहाँ यदि हिंसा करनी पड़े तो उसके लिए भी तैयार रहता है।

पण्डितजी की इस बात को सुनकर स्वाध्याय प्रेमियों ने बहुत तालियाँ बजाई होंगी, तो पण्डितजी ने शास्त्र स्वाध्याय करने वालों की बात करते हुए कहा कि शास्त्र अभ्यास करता है तो वहाँ भी पद्धतिरूप प्रवर्तता है। यदि शास्त्र वांचता है तो औरों को सुना देता है, यदि स्वयं पढ़ता है तो उसके अर्थ को नहीं समझता और यदि सुनता है तो उसे अंतरंग में धारण नहीं करता। शास्त्र अभ्यास का प्रयोजन जो वीतराग भाव की वृद्धि है, उसे तो पहिचानता ही नहीं है और बाह्य क्रियाओं के प्रदर्शन द्वारा अपने को धर्मात्मा समझता है। ऐसे व्यवहाराभासी जीव अपने परिणामों को सुधारने-बिगड़ने का विचार भी नहीं करते।

इसप्रकार कुलापेक्षा, परीक्षारहित व सांसारिक प्रयोजनार्थ धर्मधारक व्यवहाराभासियों की सामान्य प्रवृत्ति की चर्चा की अब धर्मबुद्धि से धर्मधारक व्यवहाराभासी की चर्चा करेंगे। **(क्रमशः)**

छठा धार्मिक शिक्षण शिविर ज्ञान - 2022

शुक्रवार 29 अप्रैल से मंगलवार 3 मई 2022 तक

स्थान : महावीर भवन, हिन्दवाडी बेलगावी।

जैन युवा मण्डल बेलगावी की ओर से में पंच दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर हिंदवाडी के महावीर भवन में आयोजित किया जा रहा है।

बुधवार 4 मई से रविवार 8 मई 2022 तक

स्थान : आदिनाथ भवन वाँडा कंपाउंड, अनगोल, बेलगावी।

अनगोल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में पंच दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर अनगोल के आदिनाथ भवन में आयोजित किया जा रहा है।

जैन धर्म की संस्कृति आचार विचार एवं सिद्धांत से परिचित होने का यह एक अपूर्व अवसर है। सभी अभिभावकों से करबद्ध निवेदन है कि आप सभी अपने परिवार के बालक बालिकाओं को शिविर में भेजकर सुंसस्कारित करें। शिविर में बच्चों को धार्मिक शिक्षण के अतिरिक्त कॅरिअर कॉउंसलिंग, व्यक्तित्व विकास, चित्रकला इत्यादि विषयों को पढ़ाया जाएगा।

मार्ग दर्शन **पण्डित अनेकांत शास्त्री, जैनदर्शनाचार्य**
पण्डित मिथुन शास्त्री, जैनदर्शनाचार्य

आवश्यक सूचनाएँ : 1) शिविर में 10 साल से अधिक उम्र के बच्चों को प्रवेश दिया जाएगा। 2) रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 25 अप्रैल 2022 तक रखी गई है। 3) सीमित प्रवेश होने के कारण पहले आनेवालों को मौका दिया जाएगा। 4) हर एक छात्र से 100 रुपये का प्रवेश शुल्क लिया जाएगा।

रजिस्ट्रेशन हेतु संपर्क करें -

1) श्रीमती साधना उपाध्याय 9964277541

वैराग्य समाचार

छिंदवाड़ा निवासी वात्सल्य-मूर्ति **श्रीमती कुसुमलताजी पाटनी** का 11 अप्रैल 2022 को शान्त परिणामों सहित देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप अध्यात्म प्रेमी विदुषी महिला थी एवं सभी को सदैव अध्यात्म से जुड़े रहने की प्रेरणा दिया करती थीं। छिन्दवाड़ा नगर में आयी आध्यात्मिक क्रांति में आपका सक्रिय योगदान सराहनीय रहा। दिवंगत आत्मा शीघ्र परमपद को प्राप्त करे - ऐसी मंगल भावना है।

24 तीर्थंकर विधान व सम्मान समारोह सम्पन्न

शाहदरा (दिल्ली) : यहाँ श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर शिवाजी पार्क में 24 तीर्थंकर विधान एवं विद्वत् सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। ध्वजारोहणकर्ता श्री आदीशजी रोहिणी एवं चित्र-अनावरणकर्ता श्री नीलेशजी शंकर नगर थे।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के रात्रि में संयमप्रकाश के आधार से क्रमबद्धपर्याय एवं प्रात: समयसार (ज्ञायकभाव प्रबोधनी टीका) के आधार से व्याख्यानों का लाभ मिला।

27 मार्च को रात्रि में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर द्वारा संचालित कार्यक्रम में स्नातकों से प्रेरणास्पद संवाद किया गया। 28 मार्च को 24 तीर्थंकर विधान स्थानीय विद्वान पण्डित विवेकजी शास्त्री व पण्डित संयमजी शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

सम्मान समारोह के अंतर्गत नवीन शास्त्री विद्वान पण्डित संभवजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अखिलजी शास्त्री मण्डीदीप, पण्डित आप्तजी शास्त्री दमोह, पण्डित शुभांशुजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित संयमजी शास्त्री व पण्डित प्रियांशजी शास्त्री दिल्ली को ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. अनेकांतजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री आदि विद्वानों की उपस्थिति में सम्मानित किया गया।

समस्त कार्यक्रम श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, शिवाजी पार्क के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान सम्पन्न

दलपतपुर (म. प्र.) : यहाँ श्री महावीर जिनालय में 05 से 10 अप्रैल 2022 तक श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया। विधान उद्घाटनकर्ता इन्जी. श्री भीष्मजी जैन, इन्जी. श्री संयमजी जैन व श्रीमती साधनाजी जैन सागर, मण्डप उद्घाटनकर्ता श्री मोतीलाल-मुकेशकुमारजी सांधेलिया दलपतपुर तथा मण्डल उद्घाटनकर्ता श्री जगमोहनजी ध. प. श्रीमती दीपिकाजी चिरमिरी थे।

श्री अरुणकुमार मोदी सागर के निर्देशन एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री इंदौर, पण्डित समकितजी शास्त्री सागर के संचालन में सम्पन्न इस विधान में बाल ब्र. अमितभैया विदिशा, बाल ब्र. निखिलजी मुम्बई का समागम प्राप्त हुआ। विधान आयोजनकर्ता विनोदकुमारजी, प्रमोदकुमारजी, अरुणकुमारजी, सुनीलकुमारजी, निर्मलकुमारजी एवं समस्त मोदी परिवारजन थे।

वर्ष-45 अंक -02, 17 अप्रैल 2022 5 जैन पथप्रदर्शक (पाक्षिक)

आत्मज्ञान ही ज्ञान है, शेष सभी अज्ञान।
आत्मशान्ति का मूल है, वीतराग-विज्ञान।।

मंगल आमंत्रण

वीतराग-विज्ञान ही तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का घर-घर होय प्रसार।।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली द्वारा आयोजित

54वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 15 मई 2022 से बुधवार, दिनांक 1 जून 2022 तक

अध्यात्मप्रेमी बन्धुवर,

आपको यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित 54वाँ श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष देवलाली (महा.) में रविवार, दिनांक 15 मई 2022 से बुधवार, 1 जून, 2022 तक अनेकानेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित श्री समयसार महामण्डल विधान सम्पन्न होगा।

जिनधर्मप्रभावना का यह एक महान लोकोत्तर अनुष्ठान है जिसमें कोमलमति बालकों एवं युवाओं को जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों का ज्ञान कराया जायेगा। छात्र पाठशाला में पढाने योग्य अध्यापक बन सकें, इसलिये प्रशिक्षणार्थियों को सुयोग्य प्रशिक्षकों द्वारा प्रयोगात्मक पद्धति और मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियाँ सिखाई जायेंगी एवं इसका प्रायोगिक प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। शिविर में विद्वानों के प्रवचनों, व्याख्यानमाला एवं प्रौढ़ कक्षाओं का भी आयोजन किया जायेगा।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ एवं डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बाँसवाड़ा आदि अनेक विद्वानों द्वारा प्रवचनों, प्रौढ कक्षाओं, व्याख्यानमाला, तत्त्वचर्चा आदि के माध्यम से लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में प्रशिक्षण की मुख्य कक्षायें पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा ली जायेंगी एवं प्रशिक्षण की अभ्यास कक्षायें पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा एवं पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षित स्नातक विद्वान लेंगे। समस्त बाल कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, मुम्बई के निर्देशन में होगा।

सम्पूर्ण शिविर पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होगा।

विशेष मांगलिक कार्यक्रम

रविवार, 15 मई 2022 प्रात: 8 बजे ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह	शनिवार, 21 मई 2022 स्नातक परिषद् सम्मेलन	रविवार, 22 मई 2022 डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल सम्मान समारोह एवं ढाईद्वीप पंचकल्याणक आमंत्रण
बुधवार, 25 मई प्रात: 10 बजे डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का जन्मदिवस ''संकल्प दिवस'' एवं डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल पुरस्कार वितरण	मंगलवार, 31 मई 2022 को रात्रि में प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन	बुधवार, 1 जून 2022 दीक्षान्त एवं समापन समारोह

नोट :

(1) बालबोध प्रशिक्षण में प्रवेश पाने के लिए बालबोध पाठमाला भाग-1, 2, 3 की तथा प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रवेश पाने के लिए वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1, 2, 3 की प्रवेश प्रतियोगिता लिखित परीक्षा दिनांक 15 मई को दोपहर 2.00 बजे से ली जावेगी, जिसमें प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त करना आवश्यक होगा। अत: प्रवेशार्थी उक्त पुस्तकों की पूरी तैयारी करके आएं। प्रवेशिका प्रशिक्षण में उन्हें ही प्रवेश दिया जायेगा, जो बालबोध प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

(2) सभी प्रशिक्षणार्थी एवं शिविरार्थी अपना पासपोर्ट साइज फोटो एवं परिचय-पत्र साथ में अवश्य लायें।

विशेष ध्यातव्य

शास्त्री महाविद्यालयों में प्रवेश की प्रक्रिया इसी शिविर में पूर्ण की जाती है, अत: प्रवेश इच्छुक छात्र देवलाली (महा.) अवश्य पहुँचें।

मार्ग निर्देश

मध्य रेलवे के दिल्ली-मुम्बई व दिल्ली-कोलकाता मुख्य रेलवे लाईन पर नासिक रोड़ प्रमुख स्टेशन है, यहाँ पर प्रत्येक गाड़ी रुकती है।

कार्यक्रम स्थल एवं संपर्क सूत्र

कहान नगर, लाम रोड़
देवलाली, नासिक (महाराष्ट्र)
उर्विश शास्त्री - 9079612682
फोन नं.- 02532491044

निवेदक

सुशीलकुमार गोदिका
अध्यक्ष

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल
महामंत्री

प्रवीणभाई वोरा
एवं समस्त ट्रस्टीगण

एवं समस्त ट्रस्टीगण पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली

• द्वितीय शतक : रोला शतक •

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

साधर्मी का सहज सम्मिलन हमें हुआ है।
उत्साहित है चित्त हमारा अधिक कहें क्या?।।
सहजभाव की सहज स्वीकृति तुमको होगी।
सहजभाव से पक्का है विश्वास हमारा।।९२।।

वीतराग-सर्वज्ञदेव की वाणी में जो।
आया है वस्तुस्वरूप वह परम सत्य है।।
उस पर भी विश्वास न हो तो फिर क्या बोलें?।
उन्हें मानने का तो फिर क्या अर्थ रह गया?।।९३।।

केवल पूजा-पाठ किये कुछ काम न होगा।
अरे मानना होगा उनके मूल कथन को।।
भावी का भी सब नक्की - यह मूल कथन है।
इसमें मीन-मेख करने से काम न होगा।।९४।।

पर का कर्त्ता नहीं आत्मा - मूल कथन है।
कोई किसी का नहीं सभी हैं अपने-अपने।।
सभी द्रव्य हैं कर्त्ता-धर्त्ता अपने-अपने।
कोई किसी का कुछ भी तो न करे कभी भी।।९५।।

अपना भविष्य भी जो केवलि ने जाना-देखा।
उसमें भी कुछ फेरफार की बात कल्पना।।
यह भी तो है मूल कथन इसकी उपेक्षा।
करना भी तो किसी तरह भी शक्य नहीं है।।९६।।

जो जानें केवलि यद्यपि हम नहीं जानते।
पर हम यह तो माने कि केवली जानते।।
जो भी उनने जाना-देखा भाविकाल का।
वह सब है सम्पूर्ण सत्य इतना तो मानो।।९७।।

उसमें कुछ भी फेर बदल होगा न कभी भी।
यह पक्का विश्वास हमें करना ही होगा।।
इसके बिन तो अरे बन्धुवर! मुक्तिमग में।
एक कदम भी चल पाना सम्भव न होगा।।९८।।

कर्त्तापन की बुद्धि इसके बिना न टूटे।
अर पर में अपनापन इसके बिना न छूटे।
कर्त्तापन अर अपनापन छूटे बिन भाई।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित हो नहीं सकेंगे।।९९।।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित बिन मुक्ति न होगी।
मुक्ति के बिन नहीं कहीं सुख-शान्ति मिलेगी।।
पाना है सुख-शान्ति और दुःखों से मुक्ति।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित पाने ही होंगे।।१००।।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरणमय ही जीवन हो।
एकमात्र सद्भाव यही मेरे मन में हो।।
और नहीं हो कोई कामना मेरे मन में।
सहजभाव ही सहज होय मेरे जीवन में।।१०१।।

सहजभाव ही सहज धर्म है समझो भाई!।
सहजभाव ही सच्चा जीवन जीवन धन है।।
सहजभाव की सहज स्वीकृति मुक्तिमग है।
सहजानन्दी जीवन ही सच्ची मुक्ति है।।१०२।।

सहजभाव का सहज रास्ता सहज प्राप्त कर।
मैं अपने अन्तर में अति सन्तुष्ट हुआ हूँ।।
अपने में ही जमकर रमकर हे परमातम!।
मैं अपने अन्तर में इकदम तृप्त हुआ हूँ।।१०३।।

दिव्यध्वनि में आया निश्चय मुक्तिमार्ग यह।
शेष कथन सब एकमात्र व्यवहार कथन है।।
सच्चे सुख का एकमात्र बस यही मार्ग है।
और अनन्ते सिद्ध हुये हैं इसी मार्ग से।।१०४।।

-●-

प्रश्नोत्तरमाला

18

समयसार अनुशीलन के आधार से

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 159 – क्या शुद्धनय और आत्मा की अनुभूति पर्यायवाची हैं।

उत्तर – हाँ, दोनों पर्यायवाची ही हैं।

प्रश्न 160 – इस गाथा में इन पाँच विशेषणों के माध्यम से क्या समझाया जा रहा है?

उत्तर – इन पाँच विशेषणों के माध्यम से आत्मा का शुद्ध स्वरूप समझाया जा रहा है।

प्रश्न 161 – 'अबद्धस्पष्ट' विशेषण के माध्यम से क्या समझाया जा रहा है? विस्तार से बताइए।

उत्तर – 'अबद्धस्पष्ट' विशेषण आत्मा की पर से भिन्नता को बतलाता है। जब आत्मा का पर के साथ कोई सम्बन्ध ही नहीं है तो कर्मों से बंधने की बात ही कहाँ रहती है? इसीप्रकार जब आत्मा में स्पर्श नामक गुण ही नहीं है तो उसे कोई छू भी कैसे सकता है? जिसप्रकार कमलिनी का पत्ता पानी में डूबा हुआ होने पर भी अपने रूखे स्वभाव के कारण रंचमात्र भी गीला नहीं होता उसीप्रकार आत्मा कर्मों के मध्य स्थित होने पर अपने अबद्ध-अस्पर्शी स्वभाव के कारण कर्मों से अबद्ध ही है, अस्पर्शी ही है, पर से भिन्न ही है।

प्रश्न 162 – अनन्य विशेषण के माध्यम से क्या बताया गया है? विस्तार से उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर – अनन्य विशेषण द्वारा शुद्धनय के विषयभूत आत्मा को असमानजाति द्रव्य-पर्यायों से, नर-नारकादि पर्यायों से पार बताया गया है। जिसप्रकार मिट्टी से बने हुए बर्तनों में घड़ा और तवा अन्य-अन्य हैं, जुदे-जुदे हैं, घड़ा तवा नहीं है और तवा घड़ा नहीं है। उसीप्रकार मनुष्य और नारकी अन्य-अन्य, जुदे-जुदे ही हैं। मनुष्य नारकी नहीं है, नारकी मनुष्य नहीं है; किन्तु जब हम घड़ा और तवा को दृष्टि में न लेकर जिस मिट्टी से वे बने हैं, उस मिट्टी के रूप में ही देखें तो घड़ा भी मिट्टी ही है और तवा भी मिट्टी ही है; अत: वे दोनों अन्य-अन्य नहीं; अनन्य (एक) ही हैं। इसीप्रकार जब हम मनुष्य और नारकी पर्यायों को दृष्टि में न लेकर, जिस आत्मा की वे पर्यायें हैं, उन सभी पर्यायों में व्याप्त एकाकार उस आत्मा को देखें तो मनुष्य भी आत्मा ही है और नारकी भी आत्मा ही है; अत: नारकी और मनुष्य दोनों अन्य-अन्य नहीं, अनन्य (एक) ही हैं। **(क्रमश:)**

जिनदेशना आध्यात्मिक शिविर संपन्न

पोन्नूर मलै : यहाँ 26 मार्च से 31 मार्च 2022 तक आचार्य कुन्दकुन्द की साधना एवं तपोभूमि पर श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुंबई द्वारा संचालित आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेंटर में जिनदेशना आध्यात्मिक शिविर का मंगल आयोजन किया गया। इस शिविर के शुभारम्भ में श्री मुकेशजी जैन करेली एवं श्री साकेत-कमलजी बड़जात्या मुंबई ने ध्वजारोहण किया।

प्रतिदिन प्रातःकाल श्री पंच परमेष्ठी मण्डल विधान, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, पण्डित अनुभवजी जैन करेली के व्याख्यानों का लाभ मिला। प्रातः कालीन प्रौढ़ व्याख्यानमाला के अन्तर्गत पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री, पण्डित निर्मलजी सोनगढ़, पण्डित शीतलचंदजी पटना बुजुर्ग, पण्डित अनिकेशजी करेली एवं पण्डित विरागजी शास्त्री के व्याख्यान हुए।

शिविर के दौरान पोन्नूर मलै में संचालित जिनवाणी एवं पांडुलिपि संरक्षण केन्द्र की गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया, जिसकी सभी ने अनुमोदना की। सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री के निर्देशन एवं जिनदेशना टीम के संयोजन में सम्पन्न हुआ।

मंगल आमंत्रण

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन परमागम मंदिर ट्रस्ट विदिशा के तत्त्वावधान में भगवान शीतलनाथ के चारों कल्याणक से पवित्र विदिशा में वेदी नवीनीकरण एवं वेदी शुद्धि के उपलक्ष्य में श्री यागमण्डल विधान एवं श्री समयसार मण्डल विधान का भव्य आयोजन 4 से 6 मई 2022 तक किया जा रहा है।

इस अवसर पर अध्यात्म गंगा बहाने हेतु अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के अतिरिक्त पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना व पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली का समागम प्राप्त होगा।

इस अवसर पर आप सभी सादर आमंत्रित है।

सम्पर्क सूत्र - प्रमोद जैन विदिशा, 9425638251

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन तथा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें -www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- FB-/vitragvani YT-c/ vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

17 अप्रैल 2022, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

भारत गौरव से अलंकृत : एस. पी. भारिल्ल

उदयपुर (राज) : यहाँ भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के पूर्व दिवस पर 12 अप्रैल 2022 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान एवं दिनते युवम् संस्थान उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में टाउनहॉल के ठसाठस भरे सुखाड़िया रंगमंच सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर, इंदिरा गांधी प्रियदर्शनी अवॉर्ड से सम्मानित, चैंपियंस ऑफ चेंज राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित, कुशल लेखक एवं सफल उद्यमी श्रीमान शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर को भारत गौरव पुरस्कार से अलंकृत किया गया। अन्त में अपने उद्बोधन में उन्होंने इस भौतिकवाद के युग में संस्कारों का महत्त्व बताते हुए कहा कि -

समय बदले, स्पीड से बदले; लेकिन संस्कार नहीं बदलने चाहिए।

भारत गौरव से अलंकृत होते हुए शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल

समारोह के मुख्य अतिथि मुख्य अतिथि एस.आर.जी. ग्रुप के चेयरमैन एवं अखिल भारतीय पुलक जन चेतना मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विनोदजी फानदोत उदयपुर के अतिरिक्त दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष श्री शांतिलालजी वेलावत, नगर निगम उप-महापौर श्री पारसजी सिंघवी, नगर निगम निर्माण समिति के अध्यक्ष श्री ताराचंदजी जैन, महावीर जैन परिषद के मुख्य संयोजक श्री राजकुमारजी फत्तावत, सोजतिया ग्रुप के चेयरमैन श्री रणजीतसिंहजी सोजतिया, समाजसेवी श्री बसंतीलालजी जैन थाया, श्रीमती सरलाजी सिंघवी, चैरिटेबल सोसायटी के मानद सचिव श्री श्याम.एस. सिंघवी, युवा फेडरेशन के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री, दिनते युवम् संस्था अध्यक्ष श्री हेमंतजी जैन आदि ने पगड़ी पहनाकर, उपरना ओढ़ाकर, स्मृतिचिन्ह एवं प्रशस्ति प्रदानकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री आलोक पगारिया ने किया तथा श्री हेमंतजी जैन ने उपस्थित सभासदों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

इन्द्रध्वज महामण्डल विधान सम्पन्न

जसवन्तनगर : यहाँ सकल दिगंबर जैन समाज के तत्त्वावधान में 3 से 10 अप्रैल 2022 तक श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया। प्रथम दिन भव्य शोभायात्रा के उपरांत ध्वजारोहण श्री इंद्रभानजी जैन, पण्डाल उद्घाटन श्री निर्मलजी जैन, मण्डल उद्घाटन श्री अनिलकुमारजी जैन एवं मंगल कलश स्थापना श्री देवेंद्रजी-नीराजी जैन के करकमलों द्वारा की गई।

विधान में विधानाचार्य पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के अतिरिक्त पण्डित सुनीलजी-अनिलजी-दीपकजी धवल भोपाल का सराहनीय सहयोग रहा।

इस अवसर पर एक दिन के लिए बाल ब्र. पण्डित रवीन्द्रजी आत्मन् अमायन एवं चार दिन के लिए अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर का मंगल सन्निध्य व दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

समारोह में प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त उपस्थित विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ मिला। रात्रि में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में संगीतमय बोध कथाओं एवं पाठशाला के बालक-बालिकाओं द्वारा अनेकानेक नृत्य एवं नाटिकाओं की प्रस्तुति हुई। विधान का आयोजन श्री देवेन्द्रजी-अनुपमजी-लक्ष्यजी जैन परिवार ने किया।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2022

प्रति,